कला की परिभाषा —

(1) रवीन्द्रनाथ टैगोर — "कला में मनुष्य स्वयं अपनी अभिव्यक्ति करता है।"

(2) जयशंकर प्रसाद — "ईश्वर की वक्तृत्व शक्ति का वह संकुचित रूप जो हमें बोध के लिए प्राप्त होता है, वही कला है।"

(3) महात्मा गांधी — "कला आत्मा का ईश्वरीय संगीत है।"

(4) प्लेटो — "कला, सत्य की अनुकृति की अनुकृति है।"

(5) अरस्तू — "कला, प्रकृति का अनुकरण है।"

(6) हीगल — हीगल ने कला को आदि भौतिक सत्ता को व्यक्त करने का माध्यम माना है।

(7) रस्किन — "कला, ईश्वरीय कृति के प्रति मानव के आह्लाद की अभिव्यक्ति करता है।"

(8) फ्रायड — "कला में मानव अपनी दमित वासनाओं और कुण्ठाओं की अभिव्यक्ति करता है।"

कला का वर्गीकरण — कला का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक एवं विस्तृत है। कुछ विचारक कला को केवल दो श्रेणियाँ मानते हैं।

(1) उपयोगी कला
(2) ललित कला

(1) उपयोगी कला — इसके अन्तर्गत रंगाई, छपाई, बढ़ई विधि, मिस्त्री विधि, सुनार आदि माने गये हैं।

(2) ललित कला — ललित कलाओं के अन्तर्गत पाँच कलाएं प्रमुख हैं जो निम्नलिखित हैं —